Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

23-1-2014
गुरुवार

सदगुरु वाणी -2

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

आज मुझे मौलें "मुस्लीम फकीर गुरु" की बात याद आ रही है। उन्होने मुझे बुलाकर केवल एक ही उपदेश कीया था की मेरा जिवन मे जो भी पहला कार्य करो वह सदैव सोच समझकर करो क्योकी तुम्हारे द्वारा किया गया पहला कार्य तुम्हारे भवीष्य के कार्यो की "दिशा" तय करता है, पहला किया गया कार्य तुम स्वंयम करते हो और बाद मे उसी "दिशा" मे तुमसे शकतीया कार्य करवा लेती है, सकारात्मक शकती, सकारात्मक कार्य, करवाती है, और नकारात्मक शकतीया, नकारात्मक कार्य, करवाती है, दोनो ही प्रकार की शकतीया वातावरण मे सदैव तैयार ही रहती है, वे स्वंयम कुछ नही करती इसी लीये वह अपने "माध्यम" तलाशते रहती है, उनके पास कार्य करने की इच्छाशकती है, लेकीन कार्य को करने की कर्ताशकती या क्रिया शकती नही होती है, इसी लीये वे सदैव कार्य को सपन्न करने के लिये माध्यम के तलाश मे ही रहती है।

आप अगर सकारात्मक कार्य करते हो तो सकारात्मक शक्तीया आपके पिछे हो जायेगी। और अगर आप नकारात्मक कार्य करते हो तो नकारात्मक शक्तीया आप के पीछे हो जायेगी। इस लीये "पहला कर्म" सदैव सोच समझ कर ही करो, और यह पहला कर्म हम सानीध्य के प्रभाव मे करते है। हम जिन लोगो की संगत मे होते है, उसी संगत मे हम अपना पहला कर्म करते है, यहाँ पर संगत का अर्थ शरीर के साथ होने से नही है, हमारा "चित्त" कौन पर है, हमारे चित्त मे कौन लोग है, इन सब का प्रभाव ही हमारे पहले कर्म पर पडता है।

इसलिये हमारा "चित्त" कहाँ पर है, इसी पर सब कुछ निर्भर होता है, प्रथम चित्त होता है, फीर विचार आते है, और विचारो से वृती की प्रेरणा मीलती है, फीर कर्म घटीत होता है, "आध्यात्मीक क्षेत्र" मे प्रगती के लिये मनुष्य के "कर्म" का बडा ही अधीक महत्व होता है, और इन कर्मो का "सांप और सिढ़ी" का खेल मनुष्यो के साथ जन्मो जन्मो तक चलते ही रहता है। "मोक्ष" इस सांप और सिढ़ी के खेल का "अंन्त" है, लेकीन यह आत्मा के "उत्क्रान्ती" की एक बहुत बडी प्रक्रिया है,

आत्मा को "मोक्ष" शरीर के बीना नही मील सकता और शरीर आया की साथ "कर्म" आते ही है, और इन सब कर्मो का हिसाब किताब भी "कुंडलीनी शकती" के साथ चलते रहता है, उसमे अच्छे भी कर्मो का हीसाब होता है, और बुरे भी कर्मो का हिसाब होता है, और आत्मा की "उत्क्रान्ती" बहुत ही धिरे 2 धिरे होती है। कभी अच्छे कर्म किये और उस कारण अच्छा सानीध्य मिला तो आत्मा को "अनुभुती" की प्रेरणा मिलती है, एक जन्म मे प्रेरणा मीलती है, तो दुसरे जन्म मे वह अनुभुती की ओर अग्रसर होती है, और अगले जन्म मे भी अच्छे कर्म किये तो वह अग्रसर गती की सिढी मिलती है। और वही अच्छे कर्मो की गती जारी रही तो अगले जन्म मे परमात्मा का कोई माध्यम "सदगुरु" के रुप मे मिलता है, और आत्मा को "अनुभुती" प्राप्त होती है, "अनुभुती" कराना सदगुरु का "स्वभाव" होता है, इस लीये वह आत्मा की योग्यता भी नही देखता और वह तो अनुभुती करा ही देता है, यह अनुभुती पाना सब कुछ नही है।

अनुभुती पाने के बाद क्या पाया है, उसका "एहसास" होना आवश्यक होता है, "सदगुरु" तो एक निच्छीत स्थान पर बहने वाले पवीत्रपानी के झरने के समान है, उसके निचे आगये तो स्नान सपना हो गया। अब आपको स्नान क्या है, वह पता हो या नहो स्नान तो सपन्न हो गया- क्योकी जो भी झरने के निचे आये स्नान कराना झरने का स्वभाव है, ठीक इसी प्रकार से अनुभुती कराना सदगुरु का स्वभाव है, लेकीन "अनुभुती" क्या है, इसका क्या "महत्व" है। अब इसके बाद क्या करना है। इसका भी ध्यान होना चाहीये। मुझे मेरे छोटे लडके अंबरिष के जिवन की एक घटना याद आ रही है, उसे और उसकी छोटी बहन को गुरुमाँने अच्छे से नहलाया और दोनो को दो रबुतीया देकर धुप मे बैठने को कहां और वह खाना बनाने लग गयी और कुछ समय बाद बाहर जाकर देखा तो वह अपनी बहन के सर पर "मिट्टी" चढा रहा था- और बहन उसके सर पर "मिट्टी" डाल रही थी, और दोनो ही मिट्टी से

भर गये थे। याने माँ ने "स्नान" कराया। लेकीन स्नान के बाद भी "स्नान" का "महत्व" बच्चा होने से जान न सका था।

ठिक ऐसा ही होता है। सदगुरु "अनुभुती" जो करा देता है लेकीन अनुभुती कया है, इसका ज्ञान अज्ञानता के कारण मनुष्य को नही होता है, और मनुष्य अनुभुती पा कर भी "भटक" जाता है। एक तो अनुभुती सदगुरु आसानी से कर देता है, क्योकी अनुभुती कराना सदगुरु का "स्वभाव" है, लेकीन आसान मीली "अनुभुती" का महत्व मनुष्य समझ नही पाता है, अनुभुती पाने के बाद भी मनुष्य "भ्रमीत" हो जाता है, "अनुभुती" तो मोक्ष का मार्ग है, जहाँ जाकर सारे कर्म ही समाप्त हो जाते है, लेकीन मनुष्य के बुरे "कर्म" उसके रास्ते मे बाधा खडी कर देते है, और मनुष्य को "भ्रमीत" कर देते है, और फीर वह "सांप और सिढी" के खेल की ओर चल पडता है,

आज एकान्त मे रह कर जो कुछ "गुरुकार्य" इस शरीर के माध्यम से हुआ उसका अवलोकन करता हुँ। और कहाँ गलती हुयी वह खोजता हुँ।

"सद्गुरु" की स्थिती एक माँ के समान होती है, वह अपने बच्चे को जल्दी बड़ा करना चाहती है, और इसी लीये कभी 2 वह बच्चे को आवश्यकता से अधीक दुध पिला देती है, और बच्चे को दस्त लग जाते है। ऐसा ही कुछ हुआ है, बच्चो अपने पुर्वजन्म के पुण्यकर्मो के कारण सानीध्य मे आये और मेरे शरीर के आसपास की "माया" मे फंस कर भ्रमीत हो गये। देखो कर्मो करता है। शरीर, और शरीर का "मैं," वह भले अच्छा पुण्यकर्म हो या बुरा पाप कर्म, अब बच्चोने पुर्वजन्म मे पुण्यकर्म कीये इस लीये सद्गुरु के पास आ सके। और लाखो की संख्या मे आये लेकीन आये तो शरीर द्वारा किये गये पुण्यकर्म के कारण इसी लीये साथ मे "मैं" का अंहकार भी था। और सद्गुरु के पास आकर भी "मैं" के अंहकार के कारण सद्गुरु की "माया" से भ्रमीत हो गये। अनुभुती पाकर भी इन्होने माना "मैं" ही इतना पुण्यवान था इसी लीये मुझे अनुभुती हुयी। "मैं" ही भाग्यशाली है। और अपने "मैं" के अंहकार को बढा लीया। वास्तव मे सद्गुरु का तो "स्वभाव" ही है, "अनुभुती" कराना

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

तु कोई विशेष नही है। लेकीन तेरे भितर के "मैं" के कारण तुने मान लीया की तु कोई विशेष है, सद्‌गुरु ने तेरा कार्य किया, तुझे प्रसन्न किया, तुझे खुश किया; तो तुने अपना "मैं" का अंहकार बनाया की की "मैं" उनके करीब का हुं, "मैं" ही उनके लिये विशेष हुं, लेकीन उनकी कृपा तो सब पर बरसते रहती है, वे तो सभी का कार्य करते है, सभी को प्रसन्न रखते है, यह करना सद्‌गुरु का "स्वभाव" है, यही सब सद्‌गुरु के आसपास की "माया" है, और यही सभी को भ्रमीत करते रहती है,

"माया" याने क्या, जो है, नही वह मानने लग जाना, सद्‌गुरु के लीये "मैं" कुछ विशेष हुं यह मानना जब की सब पर कृपा करना सद्‌गुरु का स्वभाव है, इस "माया" के जाल मे आकर अच्छे2 साधक साधीकाऐ भी जब भ्रमीत हो गयी। तो गुरुशक्तीयो ने नया मार्ग निकाला, कर्म का संमन्ध देह के साथ होता है, वह चाहे पुण्यकर्म ही क्यो न हो, और देह से पुण्य कर्म हुआ है। तो "मैं" का अंहकार अवश्य साथ होगा। ही, और ~~अगर~~ पुण्यकर्मो के कारण अगर

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

"सदगुरु" तक पहुचते हो। और अनुभुती पाते हो तो भी सदगुरु की "माया" से भ्रमीत होगे की "मैं" एक पुण्यआत्मा हुं इसलिये "अनुभुती" को प्राप्त हुआ।

इसी लिये सर्वप्रथम "मैं एक पवीत्र आत्मा हुं, मैं एक शुद्ध आत्मा हुं। यह आत्मभाव स्थापीत होने दिजीये। और फीर आप "अनुभुती" को प्राप्त करे। तो ही एक अनुभुती ही आपको "सदगुरु" से "समर्पण" कर समरस कर सकती है। और जो सदगुरु को "मोक्ष की स्थिती" प्राप्त है। वह स्थिती आप को अनायास ही प्राप्त हो जायेगी परमात्मा की "अनुभुती" तो आत्मा बन कर ही प्राप्त की जा सकती है, इस गहन ध्यान अनुष्ठान मे आप सभी को वह "दिव्य स्थिती" प्राप्त हो यह प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका
बाबा स्वामी